P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-11* February- 2020
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

एक भारत श्रेष्ठ भारत के संदर्भित आयाम
One India Referenced Dimensions of the Best India

Paper Submission: 12/03/2020, Date of Acceptance: 23/04/2020, Date of Publication: 25/04/2020

किरन गर्ग
असिस्टेंट प्रोफेसर,
शिक्षण–प्रशिक्षण विभाग,
दिगंबर जैन कॉलेज
बड़ौत (बागपत), उ.प्र., भारत

सारांश

भारत की संस्कृति अनेकता के में एकता पर आधारित है ।ोने की चिड़िया कहा जाने वाला भारत विभिन्न प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हुए आज भी अपनी मेहनत लगन सेवा ईमानदारी से विश्व के नक्शे में अपनी रंगारंग और अनोखी संस्कृति की छाप छोड़े हुए हैं ।

The culture of India is based on unity in diversity. India, called the bird of the world, is still in the face of various unfavorable conditions, its hard work and service has faithfully left the mark of its colorful and unique culture on the world map.

मुख्य शब्द : श्रेष्ठ ,शिक्षा ,अधिगम, स्वस्थ, भारत, आधारस्तंभ ।
Best, Education, Learning, Healthy,India, foundation.

प्रस्तावना

भारत की संस्कृति में एक आकर्षण है जो कि मनुष्यों में वसुधैव कुंटुंबकम की भावना का विकास करती है हर युग के अग्रणी भारत देश की महानता उसके इतिहास और पारंपरिक रीति.रिवाजों तथा संस्कृति एवं सभ्यता में है जिसे भारतीय विरासत भी कहा जा सकता है हमें भारत की उन्नति पर ध्यान केंद्रित करते हुए कर्तव्यनिष्ठ बनना होगा और यह समझना भी जरूरी होगा कि स्वयं की उन्नति राष्ट्र की उन्नति है इसके लिए आर्थिक विकास में वृद्धि अनुशासन स्वास्थ्य अच्छी शिक्षा सभी राजनीतिक और सामाजिक विषमताओं का निषेध परस्पर प्रजातांत्रिक व्यवस्था का पालन करना सभी के प्रति आदर रखना तथा अनेकता में एकता की भावना रखना भारत की उन्नति के आवश्यक तत्व हैं जिनके कारण ही भारत नृत्य नए आयाम निर्मित कर रहा है किसी भी देश का भविष्य उसकी शिक्षा पर ही निर्भर करता है शिक्षा के बल पर ही आविष्कार होते हैं व्यवस्था बनती है जिससे कि प्रत्येक व्यक्ति का जीवन सरल बन जाता है अतः गांव से लेकर शहर शहर से लेकर देश और देश से लेकर विदेश तक अपनी उन्नति की पताका फैलाते हुए स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने भारत की उन्नति के विषय में कहा था कि.

'बाधाएं आती हैं आएं
घिरें प्रलय की घोर घटाएं,
पावों के नीचे अंगारे,
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएं,
निज हाथों में हंसते–हंसते,
आग लगाकर जलना होगा,
कदम मिलाकर चलना होगा''

ध्यान देने का तात्पर्य यह है कि भारत में विभिन्न धर्मों संप्रदायों जातियों तथा प्रजातियों एवं भाषाओं के कारण आश्चर्यजनक विलक्षणता तथा विभिन्नता पाई जाती हैं स इस विभिन्नता की एकता का आधार भारतीय संस्कृति की एकता है । परंतु आजकल आधुनिकीकरण एवं पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव के कारण संस्कृति की एकता के विषय में मतभेद पनपते जा रहे हैं। परिणाम स्वरूप एक राज्य के निवासी दूसरे राज्य के निवासियों की भाषा तथा रीति.रिवाजों एवं परंपराओं को भी सहन नहीं कर रहे हैं। संस्कृति की संकीर्णता जैसी विघटनकारी प्रवृत्ति विकसित होने के कारण राष्ट्रीय एकता एक समस्या बनती जा रही है। अतः इस समस्या के निवारण निवारणार्थ हमारी शिक्षा को ऐसी आदतों तथा दृष्टिकोण एवं गुणों का विकास करना चाहिए जो नागरिकों को इस योग्य बना दें कि वे अपनी नागरिकता के उत्तरदायित्व का निर्वहन करके

विघटनकारी प्रवृत्तियों की उपेक्षा कर सके जो एक भारत श्रेष्ठ भारत की राह में बाधक हो स यही लेखिका का मुख्य बिंदु है कि जब संपूर्ण राष्ट्र का एक ध्वज, एक गान, एक पक्षी, एक पशु, एक पुष्प और राष्ट्रीय भाषा निर्धारित कर सकते हैंए तो हम भारत की राष्ट्रीय अस्मिताए अखंडता और सामाजिक-सांस्कृतिक एकीकरण की भावना को समझने एवं विकसित करने हेतु एक भारत श्रेष्ठ भारतश् के संदर्भित राष्ट्रीय चेतना के आयाम को रोशनी भी दे सकते हैंए जिससे कि भारत में एक नव ऊर्जा का संचार होगा स इसी उद्देश्य से मान्यवर प्रधानमंत्री मोदी जी की योजना एक भारत श्रेष्ठ भारत सरदार वल्लभभाई पटेल की स्मृति को नवजीवन देती हैए जिसमें देश के राज्य एक-दूसरे की संस्कृति को समझकर राष्ट्रीय एकीकरण में चेतना की ज्योति बनकर उन्नति का प्रकाशपुंज बन सकता है ।

जीवन संग्राम में सफल होने के लिए हमें स्वयं को विकसित करना होगा। हमें ज्ञान एवं उद्देश्य भले कोई भी देए हमें ज्ञानी नहीं बना सकता। यह कार्य हमें स्वयं ही करना होगा। भारतरत्न डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन का मानना था कि शिक्षा एक ऐसा सूर्य है जिसकी ज्ञान रूपी प्रकाश किरणे संपूर्ण विश्व और ब्रह्मांड को जागृत कर देती हैं। शिक्षा को जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया तथा संपूर्ण विश्व को एक शिक्षालय मानने वाले विद्वान का मानना था कि प्रत्येक सफलता और असफलता से प्रेरणा लेकर हम सब स्वयं अपने शिक्षक बन सकते हैं। आवश्यकता है तो चेतना स्व कप चेतना स्वरूप रहकर जीवन की चुनौतियों को स्वीकार करने की । सार्थक शिक्षक के संदर्भ में महात्मा बुध का एक वाक्य है. ष्अप्प दीपो भवष् अर्थात अपना प्रकाश स्वयं बने। विकसित राष्ट्र बनने की प्रक्रिया शिक्षा के अभाव में असंभव है। सफलता का एक ही मार्ग है कि किसी भी कार्य को पूरी लगन एवं परिश्रम से योजनाबद्ध कर संपादित करें। क्योंकि सुशिक्षित वह होता है जिसमें कुछ कर गुजरने का जज्बा हो मुश्किलों एवं चुनौतियां का आत्मबल से सामना करने की क्षमता हो। श्एक भारत श्रेष्ठ भारतश् एक ऐसी प्रभावशाली योजना है जो भारत सरकार द्वारा भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने राष्ट्रीय एकता दिवस य31 अक्टूबर 2015द्ध को सरदार वल्लभ भाई पटेल के 140वे जन्मोत्सव पर शुरू करने की घोषणा की थी। इस योजना का उद्देश्य उन भारतीयों के मध्य संस्कृतिए परंपराए भाषा जैसी विरासत हेतु संबंधों को सुधारना है जो संपूर्ण राष्ट्र के अलग.अलग भागों में रहते हैं। भारतवर्ष अपनी एकताए शांति और सद्भाव के रूप में पहचाना जाता है। इसलिए सरकार द्वारा किया गया प्रयास एक पहल के रूप में व्यक्तियों को व्यक्तियों से जोड़ेगा। निश्चित ही यह प्रयास देश की उन्नति को नई ऊंचाइयों के शिखर तक ले जाने के लिए महत्वपूर्ण कार्य है। यह योजना भारत को श्वनइंडिया सुप्रीम इंडियाश् बनाएगी। जैसे एक सुंदर पुष्पा माला बनाने हेतु विभिन्न रंग बिरंगे फूलों की आवश्यकता होती हैए उसी प्रकार विविधता में एकता हेतु एक भारत जोकि धागा स्वरूप है और उसके मोती हमारी संस्कृति के विभिन्न रूप एवं आयाम हैं।

हमारी संस्कृति हमारा गौरव एक भारत श्रेष्ठ भारत

किसी भी देश की उन्नति में उसकी संस्कृतिए सभ्यताए परंपराओंए खानपानए नृत्यए गीत.संगीतए वस्त्रए आभूषणए रहन.सहनए आचार विचार और सहेजी हुई विरासत का बहुत महत्व होता है । इसीलिए श्एक भारत श्रेष्ठ भारतश् विभिन्न राज्यों में रहने वाले लोगों के बीच संवाद को बढ़ाकर देश के विभिन्न हिस्सों के बीच सांस्कृतिक संपर्क को बढ़ावा देने की एक पहल है। इस पहल के अनुसार देश का एक राज्य दूसरे से जुड़ जाएगा और यही राज्य एक दूसरे की विरासत को बढ़ावा देंगे। इस योजना के माध्यम से एक राज्य के लोगों को अन्य राज्यों की परंपराए संस्कृति और अन्य प्रथाओं का उचित ज्ञान मिलेगाए जिससे नागरिकों के बीच संबंध और समझ में वृद्धि होगी, जिससे कि भारत की एकता और अखंडता में वृद्धि होगी। इसलिए अगर किसी देश के मूल्य और संस्कृति के वास्तविक और प्राकृतिक स्वरूप को निरखना. परखना हो तो इसका सबसे अच्छा स्रोत उस देश की संस्कृति है। कहा जा सकता है कि भारत में विविधता होने पर भारतीय संस्कृति आर्यों एवं अनआर्यों के मूल तत्व का सुंदर मिश्रण है। हमारा अध्यात्म आर्यों की देन है तो कलाओं पर अनआर्यों की महत्वपूर्ण छाप है। भारतीय संस्कृति ने समन्वयशीलता को प्रमाणित करते हुए अपने में समाहित कर एक अखंडता के अस्तित्व की महत्वता को बताया। हिमालय की बर्फीली पहाड़ियों से लेकर हिंद महासागर तक विस्तृत भारतीय भूभाग में अनेक संस्कृतियों और अनेक विविधताएं फल-फूल रही हैं। भारतीय लोकनृत्य, लोकनाटक, लोकसंगीत, लोककलाएं, लोकपरम्पराएं हमारी अमूल्य विरासत है। लोकवाद्य यंत्रों पर बजती संगीत स्वरलहरियों की मधुरता, सांस्कृतिक महोत्सवए शादी-विवाह के अवसरों पर ढोल-मंजीरे और घुंघरू की आवाजए ग्रामीण क्षेत्रों में दलिया, पिटारी, मेनी आदि सुंदर कलाकृतियां बनानाए बांस से पंखे बनानाए दोनेए पत्तलए कुम्हार के द्वारा मिट्टी से बनाए गए घड़ेए कुल्लड़ और गृहस्ती वाले झूलेए चरखा आदि अब वैश्वीकरण और वैज्ञानिक तकनीकी भेंट चड़ रहे हैं। भारतीय संस्कृति वैश्वीकरण के कारण खंडित हो रही है। इतिहास भी साक्षी है कि समय के साथ कितनी संस्कृतियों का अस्तित्व नष्ट हो गया है। लेकिन भारतीय संस्कृति में विकृतियां आने पर भी वैश्विक पटल पर आज भी देदीप्यमान है। लेकिन आधुनिकीकरण के अंधानुकरण के कारण हमारी प्राचीन लोक संस्कृति आज मात्र निजी एवं राष्ट्रीय पर्व पर झांकी.प्रदर्शनी या विशेष सांस्कृतिक महोत्सव में प्रदर्शित होने तक ही सीमित होती जा रही है। कई कलाएं विदेशों में प्रचलित हैं मगर अपने देश में उतनी ही उपेक्षित। कुछ कलाएं सरकारी संरक्षण और उचित सुविधाओं के अभाव में स्थापित पहचान बनाने को प्रतीक्षारत हैं। बस आवश्यकता उनके संरक्षण और संवर्धन की है।

भारतीय संस्कृति की विविधता का समावेश है– कुंभ

संस्कृति के कार्य और भूमिका. मनुष्य विभिन्न पर्यावरण में रहकर नई क्षमताए हुनर और कार्यशैली अपना लेता है। ऐसी स्थिति में उसकी संस्कृति में सामान्यता और विभिन्नता दोनों आ जाती हैं। जैसे शरीर के अलग.

अलग भाग एक दूसरे से अपने कार्यों द्वारा आपस में जुड़े होते हैंए वैसे ही हमारी संस्कृति भी कई भाग होने के उपरांत अपने प्रकारों द्वारा परस्पर संबंधित है। संस्कृति समाज के मनुष्यों की जीवन पद्धति है। विचारों और आदतों को एक दूसरे से सीकर भागीदारी करते हुए इसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाते हैं। बहुत बड़ी संख्या में संस्कृति ही लोगों के व्यवहार को निर्धारित करती है । संस्कृति का परिवेश बहुत विस्तृत होता है। इसमें स्पर्शनिय एवं अस्पर्शनिय दोनों वस्तुएंए भौतिक एवं अभौतिक वस्तुएं आदतेंए विचारए धाराएंए मूल्य सभी संस्कृति के अंग हैं। मकानए कपड़े व अन्य साधन जिन्हें हम स्पर्श करते हैं वह भी संस्कृति के ही अंग हैं। इन्हें मनुष्य ही बनाता है और इनमें मनुष्य ही संशोधन एवं संवर्धन करता है। संस्कृति मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति का भी एक साधन है।

संस्कृति के देश के लिए विभिन्न कर रहे हैं जिनमें प्रमुख हैं.

1. संस्कृति व्यक्ति के दृष्टिकोण को व्यापक बनाकर सामूहिक भावना पैदा करती है। संस्कृति ही व्यक्ति को अपने समाज राज्य तथा राष्ट्र से परिचित कराती है।
2. संस्कृति नवीन आवश्यकताओं को जन्म देती हैए जिसके माध्यम से समूह के सदस्यों को धार्मिकए नैतिकए कलात्मक एवं सौंदर्य संबंधित हितों की संतुष्टि होती है। क्लबए थिएटरए क्रीड़ा समूह एवं विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हमें संस्कृति की ओर ही ले जाता है। संस्कृति व्यक्तियों को बनती है और बंधे हुए व्यक्ति समाज के लाते हैं कहलाते हैं। समाज में श्रेष्ठता की भावना राष्ट्रवाद को जन्म देती है। इसीलिए एक राष्ट्रवाद हेतु एकीकरण जरूरी है। एकीकरण होगा तो परिणाम स्वरूप श्एक भारत श्रेष्ठ भारत का निर्माण होगाश् स

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' हेतु कुछ राष्ट्रीय सहयोगी संगठन हैंए जोकि इसमें अपनी भूमिका का निर्वाहन भली–भांति कर रहे हैं।

दयालबाग डीम्ड विश्वविद्यालय के डायरेक्टर एवं लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉण् एमण् बीण् लाल साहब जी के शब्द अनुसार– 'सहयोग संगठन और सफलता के सिद्धांत पर हम कोई भी मिशन पूरा कर सकते हैं, जोड़ सके जो सबको उसका नाम है एकता इसी से मिलती हैए फलता' और उपरोक्त सभी राष्ट्रीय स्वयंसेवी संगठन भी इसी सिद्धांत का अनुकरण करते हैं।

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' योजना की शुरुआत भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने राष्ट्रीय एकता दिवस 31 अक्टूबर 2015 को की थी। इस अभियान का उद्देश्य भारत की जनता के बीच भावनात्मक एकता के परंपरागत ताने.बाने को और मजबूत बनाना है। देश के विभिन्न राज्यों में सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देने हेतु एजेंडे के अनुसार भारत के लिए एक की अवधारणा सांस्कृतिक विविधता पर आधारित है। तथा कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य देश के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की समूह संस्कृति तथा विरासतए खानपानए हस्तकलाओंण् रीति.रिवाजोंए लोक गीत.संगीतए नृत्यए प्रथाओंए परंपराओं आदि को प्रदर्शित करना है। जिससे कि भारत के सभी राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों के बीच गहरा रचनात्मक संपर्क राष्ट्रीय हित में हो सके स इसके अतिरिक्त भाषाईए भौगोलिक दूरियोंको मिटानाए लोगों को भारत के विभिन्न राज्यों की संस्कृतिए सभ्यता एवं भाषा से परिचित कराना एवं प्रभावी ढंग से क्रियान्वयन हेतु राज्यों के साथ परस्पर संवाद हेतु समितियों का गठन करना आदि उद्देश्य भी हैं स इस योजना के अंतर्गत प्रत्येक वर्ष दो.दो राज्य राज्यों के जोड़े बनाएं जाते हैं जैसे चंडीगढ़ के साथ दादर नागर हवेलीए दिल्ली.सिक्किम व असमए उत्तर प्रदेश.मेघालय व अरुणाचल प्रदेशए गोवा.झारखंडए पंजाब.आंध्र प्रदेशए जम्मू कश्मीर.तमिलनाडुए उत्तराखंड.कर्नाटकए हिमाचल प्रदेश. केरलए गुजरात.छत्तीसगढ़ए महाराष्ट्र.ओडिशाए हरियाणा. तेलंगानाए बिहार.मिजोरम और त्रिपुराए राजस्थान.पश्चिम बंगालए लक्षद्वीप.अंडमान निकोबार द्वीप समूहए मध्य प्रदेश. नागालैंड व मणिपुरए पांडिचेरी दमन और दीव।

हम सभी जानते हैं कि संस्कृतिए भाषाए साहित्य और कला की कोई सीमा नहीं होती स्यह सब ही भौगोलिक परिधि को पारकर बाहर जाती हैं। अतः सभी स्कूलए विद्यालयों एवं महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में छात्रों के लिए निबंधए सांस्कृतिक नृत्य.गायनए लोकनृत्यए लोकगीत एवं विचार गोष्ठी आदि के आयोजन किए जा रहे हैं।

विभिन्न योजनाएं. कौशल विकास केंद्र योजनाए बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओए डिजिटल इंडियाए भाग्यलक्ष्मी योजनाए ग्रीन इंडियाए सीखो और कमाओए मेक इन इंडियाए प्रधानमंत्री आवास योजनाए प्रधानमंत्री जन औषधि योजनाए प्रधानमंत्री जनधन योजनाए प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजनाए प्रधानमंत्री रोजगार प्रोत्साहन योजनाए प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजनाए स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत अभियानए स्वच्छ सर्वेक्षण अभियानए स्मार्ट सिटी मिशनए मामी गंगेए सुकन्या समृद्धि योजनाए वरिष्ठ पेंशन बीमा योजना आदि योजनाओं का सार भी श्एक भारत श्रेष्ठ भारतश् ही है । अतः एक भारत श्रेष्ठ भारत हेतु हमें प्रधानमंत्री जी की योजनाओं का स्वागत करते हुए उन्हें बढ़ावा देना चाहिए स देश की उन्नति में योगदान देते हुए हमें आपस में शांतिए सहनशीलताए स्वच्छताए खुशीए प्रेमए निर्भरताए सुखए मधुरताए आनंदए आध्यात्मिकताए पवित्रता एवं सहयोग के साथ जीवनयापन करना है । तभी तो भारत एकता के धागों में बंद कर प्रजातांत्रिक गुण रूपी मोतियों से सुसज्जित श्रेष्ठ माला बनकर वैश्विक पटल पर सुशोभित हो सकता है।

निष्कर्ष

भारत में विकास की अपार संभावना हैए क्योंकि अनेकता और विविधता विकास की ओर ले जाती हैं। इसलिए भारत देश की विविधता ही उसकी शक्ति है जिसे बनाए रखना हम सबकी जिम्मेदारी है।

'भारत में मिलते हैं सभी तरह के रंग पुष्प और बागान अनेकता में एकता यही भारत की विशेषता स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत श्रेष्ठ भारत बने जब पूरा देश एक परिवार देखो तो एकता का चमत्कार सभी धर्म की एक पुकार मानवता का सत्कार।'

इस प्रकार आज के राज्यों की संस्कृति से परिपूर्ण छवि को राष्ट्रीय पहचान के रूप में ढाल लिया जाए तो भारत अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर सकता है। जैसे राष्ट्रीय एकीकरण शिविर सांस्कृतिकए समारोहए मेलेए प्रदर्शनीए वाद.विवाद प्रतियोगिताएंए कौशल विकास केंद्र और इन सब की प्रस्तुतीकरण एवं अभिव्यक्ति को प्रभावी बनाने हेतु सरकारी पोर्टल यउलहवअण्पदद्ध पर जमा कर सकने की सुविधा भी दी गई है। इस प्रकार श्एक भारत श्रेष्ठ भारतश् हेतु हमारी भूमिका का सक्रिय रहना अति आवश्यक है।

तभी तो.

'एक रहे हैं, एक रहेंगे
यह सबको समझाना है

एक भारत श्रेष्ठ भारतए भारत को फिर से बनाना है
देश प्रेम की वही भावना को जन.जन में फिर से जगाना है। '

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *विकास सिंह, 2019, एक भारत श्रेष्ठ भारत, शिक्षा*
2. *प्रधानमंत्री योजना, 2019, एक भारत श्रेष्ठ भारत*
3. *विकास तिवारी य2019द्ध एक भारत श्रेष्ठ भारत*
4. *APJ Abdul Kalam and Arun Tiwari ;2013) Jagrat Bharat Shrestha Bharat, published by Prabhat Prakashan*
5. *Gupta Kamakshi ;2012) Indian culture, Culture of India, Indianchild web 22*
6. *Shavana Rayand JK Singh ;2015) Unity in diversity: Search for common Indian National identity, DIPS ;Delhi)*
7. *Binod Bihari satpathy; 2016) Indian culture and heritage*
8. *डॉ सौरभ मालवीय, 2013 भारतीय समाजए विविधताए अनेकता में एकात्मकताए भोपाल यमध्य प्रदेश*

अन्य स्रोत

1. *सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्रए भारत सरकार*
2. *m.kzagranjosh.com*
3. *www.india.gov.in/spotlight/e*
4. *www.knowindia.gov.in/culture*
5. *www.narendramodi.in*
6. *www.newsonair.com/ek-bharat*